grant assistance of ₹43.25 crore. The EIAs are Bhagirathi Milk Union, Paschim Banga Go-Sampad Bikash Sanstha, Icchamati Milk Union, Kishan Milk Union, Kangsaboti Milk Union, Howrah Milk Union, Midnapore Milk Union, Sundarban Milk Union, Kullick Milk Union and Manbhum Milk Union.

The activities being implemented under NDP I in West Bengal include - Strengthening of Haringhata and Salboni Semen Stations to produce 4.81 million high quality disease free semen doses; Bull Production through imported Embryos, Ration Balancing sub projects which would cover 500 villages through Local Resource Persons (LRPs) to provide balanced ration to 35,000 milch animals using locally available feed resources at least cost; under the Fodder Development sub projects, silage making units will be constructed, mowers would be procured for demonstration and bio mass storage silos would be constructed; Village Based Milk procurement System (VBMPS) sub projects would provide fair & transparent milk procurement system to milk producers in 2738 villages, out of which 1256 would be new villages and 53,888 milk producers would be enrolled as members.

किसान कल्याण दिवस समारोह का आयोजन

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने डॉ. कुरियन सभागार में 2 मई 2018 को किसान कल्याण दिवस समारोह का आयोजन किया। यह कार्यक्रम ग्राम स्वराज अभियान का एक हिस्सा है जिसकी घोषणा अंबेडकर जयंती के अवसर पर ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की गई थी।

आणंद के डेरी किसानों को संबोधित करते हुए, श्री दिलीप रथ, अध्यक्ष, एनडीडीबी ने कहा की ''में लाखों भूमिहीन, छोटे एवं सीमांत डेरी किसानों और उनका प्रतिनिधित्व करने वाली उत्पादक संस्थाओं के सामूहिक प्रयासों के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी वजह से हम दूध उत्पादन में न केवल आत्मनिर्भर बन पाए हैं बल्कि विश्व के अग्रणी दूध उत्पादक भी हो सके हैं।'' आज, भारत विश्व दूध उत्पादन में लगभग 20.2% का योगदान दे रहा है और हम पिछले 5 वर्षों से लगातार लगभग 5.7% के वार्षिक दर से वृद्धि कर रहे हैं।

अध्यक्ष, एनडीडीबी ने बताया कि डेरी एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है जो पशुधन क्षेत्र के उत्पादन मूल्य में लगभग 67% का योगदान देती है। डेरी से प्राप्त आय छोटे और सीमांत किसानों के लिए लगभग 25% का योगदान देती है। अत: समान रूप से कृषि में वृद्धि हासिल करने के लिए डेरी विकास ग्रामीण भारत की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विकास गतिविधि है। सीमित संसाधनों, पर्यावरणीय समस्याओं और कम उत्पादकता वाले पशुओं की विशाल पशु आबादी के साथ डेरी मूल्य श्रृंखला में सभी स्तरों पर कार्यकुशलता सुनिश्चित करके ही हम दूध में अपनी आत्मनिर्भरता को निरंतर बरकरार रख सकते हैं और किसानों की आय को दोगुना कर सकते हैं।

यह कार्यक्रम मुख्यत: डेरी की वैज्ञानिक पद्धतियों पर केंद्रित था जिसके चार प्रमुख विषय इस प्रकार थे – फ्लेक्सी बायोगैस संयंत्र अपनाकर खाद का प्रबंधन करना, विभिन्न प्रकार की नस्लों एवं प्रजनक प्रक्रियाओं के जरिए दूध उत्पादन में वृद्धि करना, उचित लागत पर उपयुक्त पशु पोषण प्रक्रियाओं के जरिए किसानों की आय में वृद्धि करना और रोकथाम संबंधी एवं उपचारात्मक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रबंधन अपनाकर पशु स्वास्थ्य सुरक्षा की लागत में कमी लाना।